24-06-99

विदेही अवस्था का आधार है – बेहद की वैराग्य वृत्ति

आप सबका यादप्यार लेकर जब वतन में पहुंची। तो देखा कि बाबा सामने से मुस्कराते हुए आ रहे हैं। मेरे अन्दर तो संकल्प था कि आज तो मैंने बाबा को कहा था कि बाबा आज मम्मा को वतन में बुलाना, लेकिन मम्मा दिखाई नहीं देती। तो मैं चारों तरफ़ देखने लगी, इतने में बाबा बोले, आओ मेरे विश्व-कल्याणी बच्चे, बाबा के दिलतख्तनशीन बच्चे आओ। तो मैं बाबा को देख रही थी बाबा बोले – बच्ची आज तो सतगुरुवार है ना। मैंने कहा बाबा आज सतगुरुवार भी है तो मम्मा का भी दिन है। मधुबन में तो मम्मा का आह्वान हो रहा है, सभी याद कर रहे हैं। तो बाबा ने कहा अच्छा अकेले मम्मा से मिलोगी या सभी से मिलोगी? तो बाबा मेरी अंगुली पकड़कर ले चले। तो सामने क्या देखा कि एक बहुत सुन्दर सफेद-सफेद फूलों की लड़ियों से जैसे पर्दा बना था और उन फूलों से बहुत अच्छी सुगंध आ रही थी। तो जैसे आगे बढ़ी तो वह लड़ियां हटने लगी, रास्ता बन गया। अन्दर गये तो सारा हाल बहुत सुन्दर फूलों से सजा हुआ था। और एक बहुत अच्छा तख्त भी

फूलों से सजा हुआ था। अन्दर जैसे यह सब देख रहे थे तो बाबा ने कहा कि आप सब मम्मा को याद करते हो, तो आज बाबा ने भी मम्मा के स्वागत के लिए यह सजावट की है। इतने में देखा कि सामने मम्मा अपनी सभी सखियों सहित खड़ी है, मम्मा बहुत सुन्दर दिख रही थी। जैसे कोई को साक्षात्कार कराना होता है, सभी उसी रीति से खड़े थे, साथ में दीदी, बृजइन्द्रा दादी आदि सभी दादियां थी... मैं तो मम्मा को ही देखती रही, मम्मा बहुत प्यारी दिख रही है। मम्मा बाबा को देख रही थी, मैं मम्मा के सामने खड़ी हुई तो मम्मा ने देखा और मेरे सिर पर हाथ फेरा, गले से लगाया। फिर जैसे सभी अपने आप तख्त पर विराजमान हो गये। लेकिन सब दर्शनीय मूर्त थे, कोई बोल नहीं रहा था, सब मुस्करा रहे थे। बाबा ने कहा – क्यों सब चुप हो, आज कुछ बोलना नहीं है। मम्मा बोलो, बच्ची तो आपके लिए आई है। आज तो आपका आह्वान हो रहा है। मैंने कहा – मम्मा आपको सबने बहुत-बहुत यादप्यार दिया है, सब आपको बहुत याद करते थे और पूछते हैं कि मम्मा कहाँ है, कब मिलेगी। मम्मा क्या कर रही है। तो मम्मा चुपचाप मुस्कराती रही, बीच-बीच में बाबा को देख लेती थी तो मैने कहा मम्मा बताओ ना आप किस रूप में हो, कहाँ हो? क्या कर रही हो? कब प्रत्यक्षता होगी? अब तो सेवा बहुत बढ़ गई है, सब जगह सेवा हो गई है। अभी तो अन्तिम समय आकर पहुंचा है। तो बाबा ने देखा और कहा – बच्ची, जवाब दो ना। तो मम्मा फिर बाबा को देखे और कहे बाबा आप दो जवाब। तो बाबा ने कहा अच्छा मैं बता दूं कि मम्मा यहाँ है, यह कर रही है, ऐसा-ऐसा हो रहा है तो आप क्या करेंगी? सुनकर बैठ जायेंगी या वहाँ पर भागेंगी? इसलिए ड्रामा में यह अभी घूँघट में है। अभी पर्दे के पीछे है, पर्दा जब खुलेगा उसके बाद फिर गुप्त नहीं रह सकेंगी। उस समय जो सीन चलेगा वह सीन भी वन्डरफुल होगा। दुनिया की त्राहि-त्राहि का और आपकी जयजयकार का। अभी तो आपकी वाह वाह करते हैं, जय-जयकार नहीं करते, इनका ज्ञान अच्छा है, इनकी जीवन अच्छी है..यह अच्छा कार्य कर रही हैं, ऐसे कहते हैं

लेकिन जय-जयकार नहीं करते। यह तो अन्तिम समय में पार्ट खुलेगा तब आपका जय-जयकार होगा! तब मम्मा को भी सम्पूर्ण रूप से पहचानेंगे, आप लोगों को भी पहचानेंगे और बाबा को भी पहचानेंगे। तो यह सब पार्ट अन्त का है लेकिन यह पार्ट होगा ज़रूर। तो मैने मम्मा से पूछा कि मम्मा अभी कितना समय लगेगा? अभी तो बहुत समय हो गया है, २ हज़ार भी होने वाला है। तो मम्मा ने कहा – अच्छा यह बताओ कि आप सब तैयार हो? मैने कहा मम्मा समय पर तो सब तैयारी हो ही जाती है। ड्रामानुसार तो सब ठीक हैं। मम्मा ने कहा नहीं, सबकी तैयारी चाहिए। मैंने कहा कि दादी तो कहती है कि अभी बाबा बताये कि कितनी आत्मायें ऊपर हैं, बाबा सबको नीचे भेजे तो परमधाम का गेट खुले और हम सब जायें। तो बाबा ने कहा कि अभी तो कितने ऐसे स्थान हैं, जहाँ पर बाबा का सन्देश गया ही नहीं है। जब तक सब जगह सन्देश नहीं मिला है तो अभी आपके ऊपर कर्ज है। वह आपको उल्हना देंगे कि हमको पता ही नहीं चला। तो बाबा नहीं चाहता है कि बाप को और बच्चों को उल्हना मिले कि हमको पता नहीं चला। अभी तो सन्देश पहुंचाना बड़ा इज़ी हो गया है। थोड़े समय में ही हर एक को सन्देश मिल जाने वाला है। फिर मैने कहा मम्मा अभी हम लोगों को विशेष क्या पुरुषार्थ करना है? आप बताओ हम वही पुरुषार्थ करें ताकि फिर हम आपका साथी बन सकें। तो मम्मा बोली – बाबा इतनी बातें सुनाता है, इतने इशारा देता है.....फिर वह इशारे आप लोग ध्यान पर नहीं रखते हो क्या! तो बाबा ने कहा बच्चों को मम्मा की लोरी ज्यादा प्यारी लगती है। तो मम्मा मुस्कराती रही क्योंकि मम्मा बाबा के आगे इतना बोलती नहीं थी। तो बाबा ने कहा – अच्छा बच्ची आप अपनी सखियों से बात करो मैं आता हूँ। तो बाबा जैसे गुम हो गया फिर सब आपस में नज़दीक आये, फिर तो सब पूछने लगे कि मधुबन में क्या हो रहा है? तो हमने सारा सुनाया।

फिर दीदी कहती है कि पता है सब मम्मा की कितनी महिमा करते हैं, मम्मा की क्या विशेषता थी? मैने कहा मम्मा गम्भीर थी, धैर्यवत थी। बाबा

की आज्ञा का पालन करती थी... सब मैंने सुनाया। तो बोला कि मम्मा की पहली विशेषता थी कि मम्मा जब से आई - बाबा जो है जैसा है, वैसा ही मम्मा ने बाबा को पहचाना और कभी भी बाबा की कोई भी बात को हल्का नहीं लिया। कौन बोलता है, कौन डायरेक्शन दे रहा है, मम्मा ने बाबा को इस रीति से देखा और बाबा की हर आज्ञा को – जी बाबा, हाँ जी बाबा, किया। इसके अलावा कभी मम्मा ने यह नहीं कहा कि यह नहीं हो सकता। पुरुषार्थ करेंगे...देखेंगे.. यह नहीं कहा। हमेशा कहा – हाँ जी बाबा। मम्मा बाबा को सम्पूर्ण परम-आत्मा के रूप में, सर्वशक्तिवान के रूप में ही देखती रही। जो भगवान के मुख से एक-एक ज्ञान अमृत निकलता था मम्मा उसे चात्रक होकर अपने अन्दर समाती जाती थी, एक बूंद भी इधर से उधर न हो - मम्मा का इतना ध्यान था। ऐसे दीदी – मम्मा की विशेषतायें सुना रही थी।

फिर मैने कहा – मम्मा, आप हमारी उन्नति के लिए कुछ तो बताओ। अन्तिम समय हम बच्चे क्या विशेष धारणा करें? तो मम्मा ने कहा – अच्छा मेरी दो बातें हैं, इन दो बातों पर आप सब पुरुषार्थ करेंगे तो अन्तिम समय के लिए आप सब तैयार रहेंगे। मम्मा ने कहा कि वर्तमान समय को देखते हुए एक तो सभी बच्चों को बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करनी है और वह तब होगी जब हर एक यह लक्ष्य रखे कि मुझे विदेही बनना है। वैराग्य वृत्ति से ही विदेही अवस्था जल्दी आ सकती है। तो समय को देखते हुए इन दो बातों पर अटेन्शन देकर अपनी स्थिति को ऊँच बनाओ और बाबा की जो हम बच्चों के अन्दर आश है वह पूरी करो। तो मम्मा ने यही दो बातें कहते सबको याद प्यार दी। इतने में बाबा आये और कहा कि बच्ची माँ से चिटचैट हो गई। अब तो मम्मा के लिए जो भोग लाई हो वह खिलाओ। फिर बाबा ने अपने हाथ से मम्मा को भोग स्वीकार कराया। फिर बाबा ने सबको भोग स्वीकार कराया। फिर आज जिन-जिन आत्माओं का भोग था, उनको बाबा ने वतन में इमर्ज करके अपने हस्तों से भोग स्वीकार कराया और सबको यादप्यार देते कहा कि समय के अनुसार आने वाली परिस्थितियों को बाप

की याद से पार करते आगे बढ़ते चलो, बढ़ाते चलो और कोई भी बात सामने आये तो उसका अपनी स्थिति से सामना करके आगे बढ़ो। बाबा हर पल हर कदम बच्चों के साथ है और रहेगा। ऐसे कहते बाबा ने सबको याद दिया और हम नीचे आ गयी। ओमशान्ति।